पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर
राष्ट्रीय संगोष्ठी, 15–16 अक्टूबर 2019
"महात्मा गाँधी के विचारों के संदर्भ में भारतीय सामाजिक विज्ञानों की सीमाओं, संभावनाओं तथा अवसरों की समीक्षा"

"(महात्मा गांधी के विचारों के संदर्भ में भारतीय सामाजिक विज्ञानों की सीमाओं, संभावनाओं तथा अवसरों की समीक्षा) विषय पर 15–16 अक्टूबर को राष्ट्रीय–संगोष्ठी का आयोजन पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय में किया गया। जिसका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत है –

संगोष्ठी के उद्देश्य–

प्रो. गिरीश्वर मिश्र – पूर्व कुलपति, अंतरराष्ट्रीय महात्मा गांधी हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा ने अपने उद्बोधन में इस विषय पर अपने विचार रखते हुए कहा – सत्य का अर्थ जिसका अस्तित्व है और अहिंसा का अर्थ प्रेम करना। जो अपने शत्रु है उनसे भी प्रेम करने की कोशिश करें। प्रत्येक व्यक्ति को प्रेम करना चाहिए जो जहाँ कार्य कर रहा हैं उसे अपने उस कार्य से प्रेम होना चाहिए। उन्होंने आगे कहा गांधी जी ने स्वराज का अर्थ स्वयं पर नियंत्रण माना है। व्यक्ति को स्वतंत्रता इस चीज की नहीं कि वह कुछ भी करने लगे। (स्वतंत्रता हमें इसके लिए नहीं मिली है कि हम समाज के बहुमूल्य संरचना को बिगाड़े। बल्कि इसलिए मिली है कि हम अपने पर नियंत्रण रख स्वयं को, समाज को और देश को कितना अच्छा बना सकते हैं।) गांधी जी ने अपने कलकत्ता के भाषण में कहा था कि विचार की गुलामी ज्यादा गंभीर है। क्योंकि विचारों की गुलामी धीरे–धीरे विचारों की गहराई तक चली जाती है। इसलिए विचारों की गुलामी अधिक घातक है। प्रो. मिश्र ने कहा समाजवैज्ञानिकों को दो स्तरों पर जीने का अभ्यास है और इसलिए उनमें दो तरह का व्यक्तित्व झलकता है, यह गंभीर बात है। एक ओर हम बुद्धि का उपयोग कर तरह–तरह के शोध कर रहें हैं और दूसरी ओर पूजापाठ इत्यादि पर विश्वास भी कर रहे हैं। अमेरिका आदि देशों में ऐसा नहीं है। वहाँ यदि शोध कर रहा है तो वह उसका गंभीर शोध होगा। भारत में अनौपचारिक और औपचारिक दोनों रीति से जीवन यापन करते है यह एक शोध का विषय हैं। गांधी जी ने अपरिग्रह का अर्थ जितना शरीर के लिए जरूरी है उतना ही खाया जाए कहा हैं। यह उनकी समाजवैज्ञानिक सोच थी इससे लोगों की सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकती है और इससे हमारा जीवन और शरीर दोनों अच्छे रहेंगे, साथ ही हमें अपरिग्रह कर दूसरों की सेवा करने का मौका भी प्राप्त होगा। आज हमारे सामने एक गंभीर प्रश्न है कि हमने उपभोग अर्थ विकास मान लिया गया है। जो जितना अधिक भौतिक वस्तुओं का उपभोग करेगा उसे उतना ही अधिक संपन्न माना जाएगा। इस समय तो हमारे सामने एक गंभीर प्रश्न है कि कहीं उपभोगवादी युग में हम अंधे तो नहीं हो गए कहीं हम भौतिक वस्तुओं के जकड़ में तो नहीं आ गए है। इस सत्य को स्वीकारना पड़ेगा कि आखिर भौतिक वस्तुओं की भी अपनी सीमा है। प्रो. मिश्र ने कहा कि बच्चों की पढ़ायी हस्तकला से शुरू होनी चाहिए। गांधी जी ने यह बात कही थी। उन्होने यह भी कहा था कि प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में होनी चाहिए।

प्रो. अनिल दत्त मिश्र – उन्होने अपने उद्‌बोधन में कहा गांधी कौन है? गांधी वह है जो सृजनात्मक, अग्रसोची और क्रियाशील है। उन्होने कहा कि गांधी जी के अहिंसा और जैन धर्म के अहिंसा के सिद्धान्त में अंतर है। गांधी जी के दर्शन शास्त्रीय है सत्य, अहिंसा, सदाचार उनके प्रमुख सिद्धान्त है। वेद, उपनिषद, षट्‌दर्शन पुराण, महाभारत, रामायण, भवद्‌गीता जब तक नहीं पढ़ेंगे तब तक गांधी जी को नहीं समझा जा सकता। गांधी सरल है लेकिन गांधी सिद्धान्त और परिणाम कठिन हैं। हमें गांधी के सिद्धान्तों की आवश्यकता हैं। सत्य अर्थात ईश्वर सत्य है। मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर नहीं। सत्याग्रह राजनीति, सामाजिक, आर्थिक रूप से सत्य का आग्रह ही सत्याग्रह है। सर्वोदय सभी के कल्याण की कामना। आज स्वराज की आवश्यकता है। जिसे अपने समय में गांधी जी ने अपने चरखा के माध्यम से स्वराज स्थापित करने की बात कही थी। इसलिए यह कहा जा सकता है कि गांधी के विचार शास्वत सार्वभौमिक हैं।

प्रो. वंश गोपाल सिंह कुलपति पं. सुन्दरलाल शर्मा वि.वि. ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि आज गांधी के विचारों को कैसे उपयोगी और सार्थक बनाया जा सकता है यह एक प्रश्न हैं। हम गांधी जी की चर्चा करते हैं लेकिन उनके सिद्धान्त का क्या प्रभाव है या कैसे प्रभावी बनाया जा सकता है यह सोचना चाहिए। आज गांधी जी के सकारात्मक पहलुओं की ओर ध्यान देने की जरूरत है। मेरे विचार से गांधी जी को हम स्वतंत्रता नायक के रूप में जानते हैं लेकिन मेरा मानना हैं कि गांधी जी युग नायक थे। इस विषय पर मैंने अपनी जिज्ञासा जब अपने गुरू के समक्ष रखी उन्होने कहा कि गांधी एक अवतारी पुरूष थे उन्होंने सत्य, ब्रम्हचर्य महाव्रत का प्रयोग किया और पूरे देश में भ्रमण कर लोगों को इस बात को सप्रमाण बताया कि सत्य आत्मबल को बढ़ाता है।

प्रो. मनोज कुमार– समाज वैज्ञानिक अनुसंधान में गांधी जी के विचारों को कैसे समाज के सामने रखना शोध किया जाए इस विषय को सामने रखते हुए गांधी जी के विचारों को समाज विज्ञान के आधार पर विश्लेषण किया जाए। गांधी ने जब राजनीति में प्रवेश किया तो उन्होंने कई सामाजिक कुरीतियों को स्वतंत्रता प्राप्त के पथ में उलंघनीय अवरोधों के रूप में देखा। उस समय नशाखोरी, महिला, उत्पीड़न, वर्ण व्यस्था स्पृश्यता, सांप्रदायिक प्रश्न पूरे भारतीय समाज को कई खण्ड़ो में बाट कर रखी थी। सबसे ज्यादा अछूतों के प्रति लोगों में दुर्भावनायें थीं। इसी पर टिप्पणी करते हुए गांधी जी ने लिखा है, कि मैं फिर जन्म लेना चाहता हूँ, यदि मुझे जन्म लेना पड़े तो मै अछूत के रूप में जन्म लेना चाहूँगा ताकि मैं अछूतों के कष्टों, क्लेशों एवं अपमानों में भाग ले सकूँ और इन दयनीय परिस्थितियों से अपने को उबार सकूँ। अतः मेरी प्रार्थना है कि यदि मुझे जन्म लेना पड़े तो मुझे ब्राह्मण, क्षत्रिय, या शूद्र के रूप में नहीं वरन अति शूद्र के रूप में जन्म मिले।

प्रो. अरविन्द मिश्रा – भारतीय समाज के विकास के लिए सतही तौर पर नही गहराई से उतरने की आवश्यकता है ज्ञान सीमित नही उसमें अन्तःक्रिया (interaction) होना चाहिए। गांधी जी स्वयं यह बात स्वीकारते थे कि मेरे लिए राजनीतिक सत्ता साध्य नहीं वरन मानव की उन्नति के लिय प्रत्येक क्षेत्र में साधन मात्र है। वे पुनः लिखते हैं कि राजनीतिक सत्ता का अर्थ है– राष्ट्र के प्रतिनिधियों द्वारा राष्ट्रीय जीवन को नियमित करने की क्षमता। यदि राष्ट्रीय जीवन इतना पूर्ण हो जाये कि व्यक्ति स्वयं ही नियमित अथवा आत्म अनुशासित बन जाए तो प्रतिनिधित्व की आवश्यकता ही नहीं रह जायेगी।

प्रो. मिथिलेश कुमार – गांधी जी ने आत्मबल, प्रेम बल, न्याय बल पर विशेष जोर दिया है उन्होने कहा शिक्षा से बच्चे का समाज में प्रवेश करा उन्हें जानने, समझने के सक्षम बनाया जा सकता है। गांधी रोटी के लिए श्रम को महत्वपूर्ण मानते है और कहते है कि प्रत्येक व्यक्ति को उत्पादन कार्य में इतना योग अवश्य देना चाहिए कि वह अपनी रोटी को अपने श्रम द्वारा प्राप्त कर सके। कुटीर उद्योग को गांधी जी ने महत्वपूर्ण माना। वें मानते थे कि कुटीर उद्योगों के अन्तर्गत घर–घर में चरखें और करघे होने चाहिए। इनके अतिरिक्त ग्रामों में कृषि सम्बन्धी लघु उद्योगों एवं ग्रामवासियों को दैनिक आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए विभिन्न धन्धों की स्थापना की जानी चाहिए।

प्रो. बालकृष्ण कुशवाहा– गांधी जी की चिंतन प्रणाली प्राचीन है उन्होने गीता के मंत्र को धारण कर जीवन यात्रा की है। गांधी जी कहते थे– राजनीति के लिए तो क्या स्वयं के लिए भी झूठ नहीं बोल सकता हूँ। वे कहते थे सरकार वो सबसे अच्छी है जो सबसे कम शासन करती है। लोकतन्त्र की व्यवस्था पर अपनी महत्वपूर्ण टिप्पणी देते हुए गांधी जी लिखते है कि बहुमत के नियम का यह अर्थ नहीं कि यदि किसी व्यक्ति की राय भी है तो भी उसे दबा दिया जाय। यदि किसी व्यक्ति की राय ठीक है तो उस व्यक्ति की राय को बहुमत की राय से अधिक महत्व दिया जाना चाहिए। ब्यौरे की बातों में बहुमत की बात को माननी चाहिए, किन्तु बहुमत के प्रत्येक निर्णय को स्वीकार कर लेना, दासता का चिन्ह है। लोकतंत्र ऐसा राज नहीं जिसमें लोक भेड़चाल का अनुसरण करें यह मेरे सच्चे लोकतन्त्र की कल्पना है।

प्रो. गौरी दत्त शर्मा – समाज में बुद्ध, तुलसी, कबीर कभी–कभी पैदा होते है गांधी जी भी उसी में आते है। गांधी जी सरल व्यक्तितत्व थे किन्तु विश्व के सारे पूँजीपति उन्हे मदद के लिए हमेशा तैयार रहते थे। उन्होने कहा कि नजरिया बदलोगे तो जीने का तरीका बदलेगा। वे कहते है गांधी जी व्यक्ति नहीं है बल्कि विचारधारा है, उनमें मूल्य शास्वत है।

प्रो. मनीषा दुबे– गांधी जी भारतीय संस्कृति, ज्ञान, समानता को ही सर्वोपरि मानते थे। उन्हे विदेशो से सीखने की आदत नहीं उन्हे अपने देशों से अपनी संस्कृति से सीखा जा सकता है। वे कहते हैं कि, आर्थिक समानता यह है कि जिन मुट्ठी भर लोगों के हाथों में राष्ट्रीय सम्पत्ति का अधिकांश भाग एकत्र हो गया है वे नीचे उतरें और जो करोड़ो नंगे और भूखे व्यक्ति हैं वे ऊपर उठें। जब तक धनी और निर्धन व्यक्तियों के बीच में चौड़ी खाई है, अहिंसात्मक राज्य की स्थापना सर्वथा असंभव है। यदि संपत्ति और संपत्ति से प्राप्त होने वाली सत्ता का स्वेच्छा से त्याग नहीं किया जायेगा, होने वाली सत्ता का स्वेच्छा से त्याग नहीं किया जायेगा, और सार्वजनिक हित के लिए उसके संकुचित भाग का प्रयोग नहीं किया जायेगा तो क्रान्ति और रक्त का प्राप्त होना आवश्यक है।

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्टी में 70 शोध पत्रों का वाचन प्रतिभागियों द्वारा किया गया। इन दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में सम्मानीय वक्तागणो के उद्‌बोधन से प्राप्त सुझाव निम्नानुसार हैं –

- स्वतन्त्रता हमें समाज के बहुमूल्य संरचना को बिगाड़ने के लिए प्राप्त नहीं हुई है, वरन् इसलिए प्राप्त हुई है कि हम स्वयं पर नियन्त्रण रखकर समाज को अच्छा बनाने में सहायक हो सके।

- बच्चों की पढ़ाई हस्तकला से शुरू होनी चाहिए।
- प्रारम्भिक शिक्षा मातृभाषा में होनी चाहिए।
- वर्तमान समय में स्वराज की आवश्यकता है, जिसे अपने समय में गांधी जी ने अपने चरखा के माध्यम से स्थापित करने कहा था।
- सत्य आत्मबल को बढ़ाता है।
- भारतीय समाज के विकास के लिए सतही तौर पर नही गहराई से उतरने की आवश्यकता है।
- ज्ञान सीमित नहीं उसमें अन्तःक्रिया होनी चाहिए।
- राजनीतिक सत्ता से तात्पर्य है– राष्ट्र के प्रतिनिधियों द्वारा राष्ट्रीय जीवन को नियमित करने की क्षमता।
- घर में कुटीर उद्यागों के अन्तर्गत चरखे और करघे होने चाहिए।
- ग्रामों में कृषि सम्बन्धी लघु उद्योगों एवं ग्रामवासियों को दैनिक आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए विभिन्न धन्धों की स्थापना की जानी चाहिए।
- यदि किसी व्यक्ति के द्वारा दिए गए राय ठीक है तो उसे बहुमत की राय से ज्यादा महत्व दिया जाना चाहिए।
- गंधी जी व्यक्ति नही है। विचारधारा है, उनके मूल्य शाश्वत है।
- राष्ट्रीय जीवन यदि इतना पूर्ण हो जाये कि व्यक्ति स्वयं ही नियमित अथवा आत्म अनुशासित बन जाए तो प्रतिनिधित्व की आवश्यकता ही नहीं रह जायेगी।
- जब तक धनी और निर्धन व्यक्तियों के बीच चौड़ी खाई है, अंहिसात्मक राज्य की स्थापना सर्वथा असंभव हैं।
- सच्चा समाजवाद हमें अपने पूर्वजो से प्राप्त हुआ है, जिन्होने हमें सिखाया है कि समस्त भूमि गोपाल की है इसमें रेखाएं मनुष्यों ने बनायी है और वही इन्हे मिटा सकता है।
- शिक्षा का उद्देश्य अंहिसक, गैर शोषित सामाजिक व्यवस्था स्थापित करना है। शिक्षा मस्तिष्क, शरीर और आत्मा का चहुँमुखी विकास हैं, यह शिल्प उन्मुखी है जिसमें दृष्टकला महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।